बी. ए. खण्ड-तृतीय/हिन्दी (प्र०)/अध्ययन सामग्री
डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 09.04.2020

पत्र :: अष्टम/ साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना

रस (शेष भाग..)

1) स्थायी भाव :— भाव अर्थात मन में स्थित विकार, कहा भी गया है — 'विकारो मनसोभाव' अर्थात् मानव में संस्कार रूप से सदैव स्थायी रूप से स्थित रहने वाले भाव को स्थायी भाव कहते हैं। पंडितराज जगन्नाथ ने 'रसगंगाधर' में इसकी इस प्रकार परिभाषा दी है—

"सजातीय-विजातीयैरतिरस्कृतमूर्तिमान्।
यावद्रसं वर्तमानः स्थायिभावः उदाहृतः ॥"

अर्थात् जिस भाव का स्वरूप सजातीय एवं विजातीय भावों से तिरस्कृत न हो सके और जब तक रस का आस्वाद हो, तब तक जो वर्तमान रहे, वह स्थायी भाव कहलाता है।

भरत मुनि ने भावों की संख्या उनचास (49) बतायी है, जिनमें तैंतीस संचारी/व्यभिचारी, आठ सात्विक और शेष आठ स्थायी भाव हैं। भरत मुनि के अनुसार वे हैं—

1) रति 2) हास 3) शोक
4) क्रोध 5) उत्साह 6) भय
7) जुगुप्सा 8) विस्मय

बाद में शम या निर्वेद (शांत) को भी नवम् स्थायी भाव माना गया। उसके बाद के आचार्यों ने भक्ति और वात्सल्य को भी स्थायी भाव मान लिया। इस प्रकार स्थायी

भावों की कुल संo- 11 (ग्यारह) हैं।

02. विभाव :- विभाव अर्थात् क्रिया या कारण, स्थायी भाव (रस) को उत्पन्न करने वाले हेतु अथवा कारण को विभाव कहते हैं।

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में लिखा है—
'रत्युद्बोधका: लोके विभावा: काव्य-नाट्ययो: अर्थात् जो समाज में रति आदि भावों का उद्बोधन करते हैं।
इसके दो भेद हैं—
क) आलंबन विभाव
ख) उद्दीपन विभाव

क) आलंबन विभाव :- जिसे देखने से किसी प्रकार का भाव मन में जागृत हो तो उस दृश्य वस्तु या कारक को 'आलंबन विभाव' कहेंगे। साथ ही जिसके हृदय में यह भाव जगे, उसे 'आश्रय' कहा जाता है।

ख) उद्दीपन :- जो भावों को जगाने में सहायक हो उसे उद्दीपन विभाव कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में लिखा है—
"उद्दीपनविभावास्ते रसमुद्दीपयन्ति ये।"

उदाहरण :- पुष्प वाटिका के मनोरम वातावरण में जानकीजी को देखकर श्रीराम के मन में प्रेम भाव जागृत हुआ। यहाँ जानकी जी = प्रेमभाव (रतिभाव) का आलंबन और श्रीराम आश्रय। वहीं चारों तरफ का मनोरम वातावरण उद्दीपन विभाव का उदाहरण है।